अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है

प्रमाणों और चमत्कारों का विश्वकोश

मुहम्मद ﷺ की नुबूवत और क़ुरआन के सत्य होने के प्रमाण

वैज्ञानिक चमत्कार · ऐतिहासिक और पुरातात्विक साक्ष्य · पूरी हुई भविष्यवाणियाँ

तौरात और इंजील की शुभसूचनाएँ · जिन्न, जादू और अदृश्य का संसार

इतनी सरलता से समझाया कि बच्चा भी समझ ले · 151 रंगीन चित्र

151 प्रमाण, अपनी शक्ति के क्रम में

भाग दो

मुहम्मद ﷺ की वे भविष्यवाणियाँ जो सच निकलीं

दूर के भविष्य के बारे में कही गई बातें, जिन्हें उनके साथियों ने अपनी किताबों में लिख रखा, और फिर वे संसार की आँखों के सामने ठीक वैसी ही घटित हुईं जैसा उन्होंने कहा था — अक्षर दर अक्षर।

18 प्रमाण

विजय

76 क़ुस्तुन्तुनिया अवश्य फ़तह होगी

क़ुस्तुन्तुनिया अवश्य फ़तह होगी। कितना उत्तम होगा उसका सेनापति, और कितनी उत्तम होगी वह सेना।

अहमद और बुख़ारी की 'तारीख़' में रिवायत — कई विद्वानों ने सहीह ठहराया

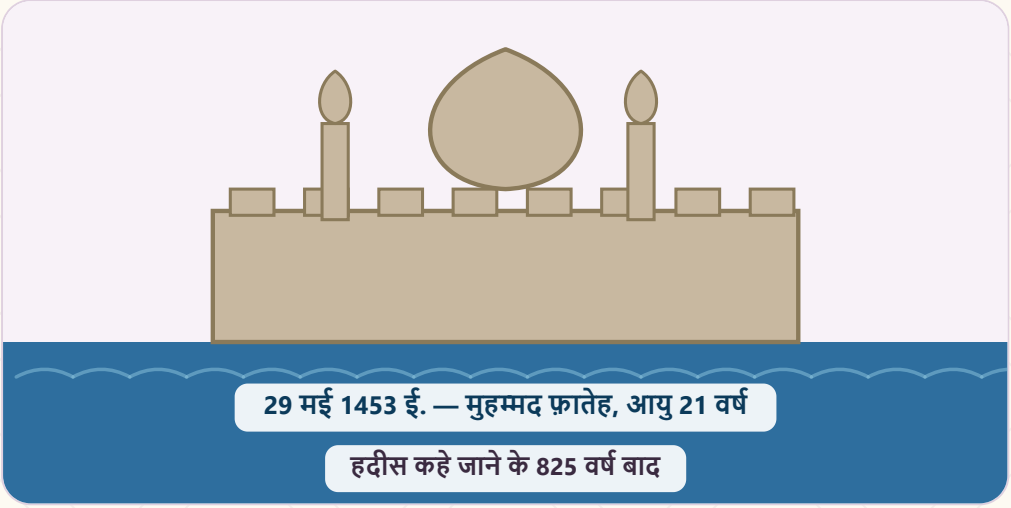

क़ुस्तुन्तुनिया: प्राचीन संसार का सबसे दुर्भेद्य क़िलाबन्द नगर

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि **क़ुस्तुन्तुनिया फ़तह होगी**, और उस सेनापति तथा उसकी सेना की प्रशंसा की जो उसे फ़तह करेगा। आठ सदी से भी अधिक बाद सुल्तान मुहम्मद फ़ातेह ने उसे फ़तह किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

क़ुस्तुन्तुनिया **धरती के सबसे शक्तिशाली ईसाई साम्राज्य की राजधानी** थी और मौजूद सबसे भारी क़िलाबन्द नगर: विशाल आकार की तिहरी दीवारें, लोहे की ज़ंजीर से बन्द बन्दरगाह, और तीन ओर समुद्र। वह सदियों में बीस से अधिक घेराबन्दियाँ झेल चुकी थी। और कहने वाले उस क्षण मदीना में थे, और उनके राज्य के पास कोई नौसेना थी ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

29 मई 1453 को सुल्तान मुहम्मद द्वितीय ने इक्कीस वर्ष की आयु में वह नगर फ़तह किया, और इसीलिए "फ़ातेह" कहलाए। उन्होंने एक ऐसी विशाल तोप इस्तेमाल की जिसके जैसी कभी देखी न गई थी, और ज़ंजीर को बचाकर निकलने के लिए **अपने जहाज़ ज़मीन पर से ले गए**, चिकने किए गए तख़्तों पर। यह घटना विश्व इतिहास की सबसे प्रसिद्ध घटनाओं में है और उसे मध्ययुग के अन्त का चिह्न माना जाता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

हदीस विजय की घोषणा पर नहीं रुकी; उसने **विजेता और उसकी सेना की पहले से प्रशंसा की** — और इससे दाँव और बढ़ जाता है, क्योंकि यह पाठ की सच्चाई को ऐसे व्यक्ति के चरित्र से बाँध देता है जो अभी पैदा ही नहीं हुआ। मुसलमान सेनापति आठ सदी तक उस सम्मान के लिए होड़ करते रहे: मुआविया, सुलैमान बिन अब्दुल-मलिक और हारून अर-रशीद — सबने उसकी घेराबन्दी की और असफल रहे — और **हर असफल कोशिश हदीस को झुठलाने का अवसर थी, उसकी पुष्टि का नहीं**। फिर विजय इक्कीस वर्ष के एक नौजवान के हाथों आई, और ऐसी तकनीक से जिसकी किसी ने कल्पना भी न की थी।

साम्राज्यों का पतन

77

जब किसरा मिट जाएगा तो उसके बाद कोई किसरा नहीं

जब किसरा मिट जाएगा तो उसके बाद कोई किसरा नहीं, और जब क़ैसर मिट जाएगा तो उसके बाद कोई क़ैसर नहीं। उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, उन दोनों के ख़ज़ाने अवश्य अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किए जाएँगे।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

यह तब कहा गया जब वे शक्ति के चरम पर थे

फ़ारस और रोम शासन कर रहे हैं
ज्ञात संसार के आधे पर
और मुसलमान मदीना में
बिना धन का एक नवजात राज्य

→

और वैसा ही हुआ जैसा उन्होंने कहा

यज़्दगर्द, अन्तिम किसरा
फ़ारस मिट गया और फिर न लौटा
और रोम ने शाम तथा मिस्र खो दिए
और दोनों के ख़ज़ाने बैतुल-माल में

कहने और घटने के बीच: तीस वर्ष से भी कम

दो साम्राज्य जिन्होंने सदियों राज किया... एक ख़त्म हुआ और दूसरा पीछे हट गया

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि जब **फ़ारस का बादशाह मरेगा तो उसके बाद उस जैसा कोई बादशाह नहीं आएगा**, और यही रोम के बादशाह के साथ भी, और यह कि उनके ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च होंगे। और सब कुछ वैसा ही हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

फ़ारस और रोम निर्विवाद रूप से **दुनिया की दो महाशक्तियाँ** थीं, जिन्होंने पूरब और पश्चिम आपस में बाँट रखे थे, और जिनकी सेनाएँ तथा ख़ज़ाने गिनती से बाहर थे। मुसलमान उस समय मदीना में एक छोटा-सा समुदाय थे, ख़न्दक़ में घिरे हुए और भूख से पेट पर पत्थर बाँधे हुए। और ठीक उसी क्षण ये शब्द कहे गए।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सासानी राज्य 651 ईस्वी में **यज़्दगर्द तृतीय** के मारे जाने के साथ सदा के लिए गिर गया, और फ़ारस के किसी बादशाह ने फिर कभी वह उपाधि नहीं धारण की। रहा रोम, तो उसका राज्य तुरन्त मिटा नहीं, पर उसने **शाम, मिस्र और उत्तरी अफ़्रीक़ा खो दिए** और पीछे हट गया, और क़ैसर का उन भूमियों पर फिर कभी अधिकार नहीं रहा। किसरा के ख़ज़ाने उमर की ख़िलाफ़त में मदीना लाए गए और बाँटे गए, तो उन्होंने कहा: "जिस क़ौम ने यह पहुँचा दिया वह सचमुच अमानतदार है।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दोनों वाक्यों के बीच के बारीक अन्तर पर ध्यान दीजिए। किसरा के बारे में कहा गया "उसके बाद कोई किसरा नहीं" — और **फ़ारस बिलकुल ख़त्म हो गया**। क़ैसर के बारे में वही कहा गया — और **रोम ख़त्म नहीं हुआ, बल्कि इस्लाम की भूमियों से पीछे हट गया**। और यह हदीस के सन्दर्भ से मेल खाता है: बात यह हो रही है कि उस भूमि पर कौन राज करता है और उसके लिए कौन झगड़ता है। और इससे भी सूक्ष्म: हदीस ने **ख़ज़ानों को, भूमि को नहीं**, धुरी बनाया: "उन दोनों के ख़ज़ाने अवश्य अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किए जाएँगे" — और यही वह वाक्य है जिस पर उन्होंने क़सम खाई। धरती के दो सबसे धनवान बादशाहों की दौलत का वादा — और वह भी ऐसे व्यक्ति की ओर से जिसे अपना रात का खाना नहीं मिल रहा था।

78

आन्तरिक कलह

अम्मार को विद्रोही गिरोह क़त्ल करेगा

अफ़सोस अम्मार पर — उसे विद्रोही गिरोह क़त्ल करेगा। वह उन्हें जन्नत की ओर बुलाएगा और वे उसे आग की ओर बुलाएँगे।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

मदीना की मस्जिद बनते समय कहा गया — सन् 1 हिजरी

जिस दिन यह घटा, हदीस दोनों गिरोहों के बीच निर्णायक दलील बन गई

यहाँ तक कि उन्होंने उसी लड़ाई में उससे बहस की

हिजरत के पहले वर्ष कही गई एक भविष्यवाणी, जो छत्तीस वर्ष बाद पूरी हुई

सीधी-सादी बात में

मस्जिद बनाते समय नबी ﷺ ने अम्मार बिन यासिर के बारे में कहा कि **उन्हें एक अन्यायी गिरोह क़त्ल करेगा**। छत्तीस वर्ष बाद अम्मार सिफ़्फ़ीन की लड़ाई में क़त्ल हुए — और लोगों को पता चल गया कि विद्रोही कौन है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ये शब्द तब कहे गए जब मुसलमान **मदीना के आरम्भ में एक ही, प्रेम से भरा समुदाय** थे, न कोई कलह न कोई फूट, और उनमें से हर एक अपने हाथों मस्जिद बना रहा था। यह विचार कि मुसलमान आपस में लड़ेंगे, और कोई बड़ा सहाबी मुसलमानों के ही हाथों क़त्ल होगा — किसी के मन से सबसे दूर की बात थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

अम्मार बिन यासिर सन् 37 हिजरी में सिफ़्फ़ीन की लड़ाई में, नब्बे वर्ष से ऊपर की आयु में, अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के पक्ष में क़त्ल हुए। **जब यह मालूम हुआ कि वे क़त्ल हो गए तो शाम की सेना में भारी बेचैनी फैल गई**, क्योंकि हदीस उनमें प्रसिद्ध और प्रचलित थी। यह हदीस दोनों सहीह संग्रहों में दर्ज है और सहाबा के एक समूह से इतनी सनदों से रिवायत हुई है कि तवातुर के दर्जे तक पहुँच जाती है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस भविष्यवाणी की सबसे प्रबल बात यह है कि **दोनों झगड़ते पक्ष इसे जानते थे और इससे दलील देते थे** — तो यह घटना के बाद लिखी गई कोई ख़बर नहीं, बल्कि दशकों पहले से प्रचलित एक ख़बर है, इतनी कि उसका पूरा होना दोनों सेनाओं में से एक में सच्चा संकट पैदा कर गया। यदि हदीस सिफ़्फ़ीन के बाद गढ़ी गई होती, तो जिस पक्ष की वह निन्दा करती है वह उसे कभी क़बूल न करता। और नबी ﷺ ने **एक विशेष व्यक्ति**, **उसकी मृत्यु का ढंग** (क़त्ल, बीमारी नहीं), और **उसके क़ातिलों का वर्णन** (एक विद्रोही गिरोह — यानी अन्यायी मुसलमान, काफ़िर नहीं) — तीनों बताए। तीन बन्धन, तीनों एक साथ पूरे।

राजनीति

79 मेरा यह बेटा एक सरदार है

मेरा यह बेटा एक सरदार है, और शायद अल्लाह इसके ज़रिये मुसलमानों के दो बड़े गिरोहों में सुलह करा दे।

बुख़ारी की रिवायत — सहीह

यह तब कहा गया जब हसन एक नन्हे बच्चे थे

न दो गिरोह न कोई लड़ाई
और पूरी उम्मत एक
और वह बच्चा अभी बालिग़ भी न था
और उसका कोई पद भी न था

सन् 41 हिजरी — एकता का वर्ष

उम्मत दो सेनाओं में बँट गई
हसन सुलह के लिए पद छोड़ देते हैं
तो मुसलमान एक हो गए
और उसका नाम पड़ा: एकता का वर्ष

उन्होंने ख़िलाफ़त सक्षम होते हुए छोड़ दी — और ख़ून बहने से बचा लिया

आरम्भिक इस्लामी इतिहास की सबसे बड़ी सुलह, और उसका कर्ता बालिग़ होने से पहले ही नाम ले लिया गया

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने अपने नाती हसन को गोद में उठाया जब वे नन्हे बच्चे थे, और कहा: **अल्लाह इनके ज़रिये मुसलमानों के दो बड़े गिरोहों में सुलह करा देगा**। लगभग चालीस वर्ष बाद उन्होंने ठीक यही किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

समुदाय में उस समय दो गिरोह थे ही नहीं — वह अपने नबी के पीछे एक ही समुदाय था। और जिस बच्चे के बारे में यह कहा गया वह अभी बालिग़ भी न हुआ था, और किसी को नहीं पता था कि वह क्या बनेगा। हदीस एक साथ तीन अज्ञात बातें बताती है: कि समुदाय **बँटेगा**, कि वह बँटवारा **एक सुलह पर ख़त्म होगा**, और कि वह विशेष बच्चा ही उसे कराने वाला होगा।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सन् 41 हिजरी में, अली रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल के बाद, हसन के हाथ पर ख़िलाफ़त की बैअत हुई, और उनके साथ एक बड़ी सेना थी। फिर उन्होंने **मुसलमानों का ख़ून बचाने के लिए उसे मुआविया को सौंप दिया**, और वर्षों की लड़ाई के बाद समुदाय एक ही व्यक्ति के पीछे एक हो गया। उस वर्ष को समूचे इस्लामी इतिहास में **"एकता का वर्ष"** कहा जाता है। हदीस सहीह बुख़ारी में है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

सोचिए कि यह एक वाक्य कितनी बातें माँगता है: ऐसे समुदाय में **आने वाली कलह** की पुष्टि जो अभी बँटा ही नहीं, **उसे ख़त्म करने वाले व्यक्ति** की पहचान जब वह अभी बोलता तक नहीं, और **ढंग** का निर्धारण — सुलह, युद्ध में विजय नहीं। और आख़िरी बात सबसे चौंकाने वाली है: जिस आदमी के पास सेना और वैधता हो उसके लिए स्वाभाविक रास्ता तो लड़ना है। नबी के नाती का वर्णन ऐसे व्यक्ति के रूप में करना जो सक्षम होते हुए पीछे हट जाएगा — **और वह क़दम जिस पर उनके अपने कुछ अनुयायियों ने उन्हें उलाहना दिया** — और फिर इसी को "सरदारी" और "सुलह" कहना, हर राजनीतिक अपेक्षा के विरुद्ध एक फ़ैसला है। और वह शब्द दर शब्द पूरा हुआ।

राजनीति

80 ख़िलाफ़त तीस वर्ष — फिर बादशाहत

मेरी उम्मत में ख़िलाफ़त तीस वर्ष है; फिर उसके बाद बादशाहत होगी।

अबू दाऊद और तिर्मिज़ी की रिवायत — अलबानी ने सहीह ठहराया

ठीक तीस वर्षों में पाँच ख़लीफ़ा... फिर शासन-व्यवस्था बदल गई

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि नुबूवत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त केवल **तीस वर्ष** रहेगी, और उसके बाद शासन एक वंशानुगत बादशाहत में बदल जाएगा। और गणित ठीक-ठीक सही निकला।

उस समय लोग क्या मानते थे?

धरती पर हर जगह शासन-व्यवस्थाएँ वंशानुगत बादशाहतें थीं: फ़ारस, रोम, हबशा और यमन। क्षितिज पर कोई दूसरी व्यवस्था थी ही नहीं। किसी ऐसी व्यवस्था को जो अभी शुरू भी नहीं हुई **वर्षों में एक आयु** दे देना, और फिर यह कहना कि वह किसी और चीज़ में बदल जाएगी — यह एक ख़तरनाक निर्धारण है, जो गिनती और हिसाब के लिए खुला पड़ा है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

ख़िलाफ़त नबी ﷺ के देहान्त से सन् 11 हिजरी में शुरू हुई: अबू बक्र दो वर्ष तीन महीने, फिर उमर साढ़े दस वर्ष, फिर उस्मान लगभग बारह वर्ष, फिर अली लगभग पाँच वर्ष, फिर हसन लगभग छह महीने, जब तक उन्होंने सन् 41 हिजरी में पद नहीं छोड़ दिया। **कुल: ठीक तीस वर्ष।** फिर शासन एक ऐसी बादशाहत बन गया जो उमय्यों में और फिर अब्बासियों में विरासत से चला।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह एक ऐसी संख्या है जो **नापी जा सकती है और झुठलाई जा सकती है**, न कि कोई आम वर्णन जिसमें व्याख्या की गुंजाइश हो। यदि अवधि दो वर्ष अधिक या कम चलती, तो मामला खुल जाता। और इससे भी विलक्षण: हदीस ने यह नहीं कहा कि "फिर इस्लाम ख़त्म हो जाएगा" और न यह कि "फिर कुफ़्र छा जाएगा" — उसने कहा "फिर **बादशाहत**", यानी शासन के रूप में बदलाव, राज्य के बने रहते हुए। और ठीक यही हुआ: इस्लामी राज्य बना रहा और फैलता गया, पर शासक चुनने का तरीक़ा बदल गया। राजनीतिक वर्णन में ऐसी बारीकी जो संख्या की बारीकी से किसी तरह कम नहीं।

नगर और निर्माण

81 भेड़ चराने वाले ऊँची इमारतों में होड़ करते हुए

यह कि लौंडी अपनी मालकिन को जनेगी, और यह कि तुम नंगे पाँव, नंगे बदन, कंगाल भेड़ चराने वालों को ऊँची इमारतों में होड़ करते देखोगे।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — जिब्रील वाली हदीस

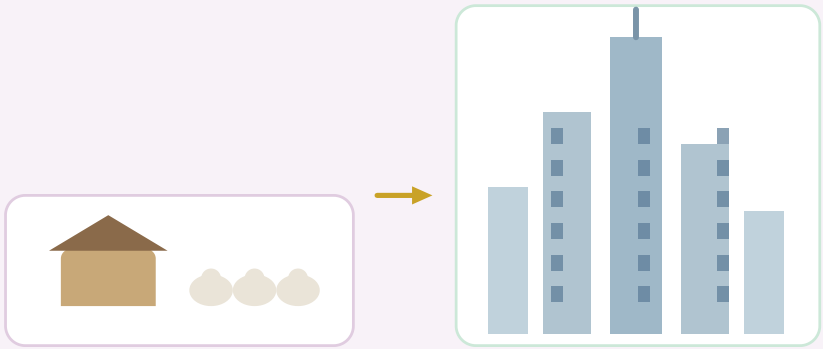

तम्बुओं और मिट्टी के घरों में चरवाहे

धरती की सबसे ऊँची मीनारें, प्रायद्वीप में

आज दुनिया की सबसे ऊँची इमारत उसी रेगिस्तान में खड़ी है जिसके घर कभी बाल और मिट्टी के थे

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने ख़बर दी कि अन्तिम युग की निशानियों में यह होगा कि **ग़रीब, नंगे पाँव चरवाहे** ऊँची इमारतें उठाने में होड़ करेंगे। और आज आप यही अपनी आँखों से देख रहे हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब प्रायद्वीप उस समय धरती का सबसे ग़रीब बसा हुआ क्षेत्र था: न कोई नदी, न खेती, न कोई ज्ञात खनिज। उसके लोग चरागाह के पीछे चलने वाले चरवाहे थे, उनके घर बाल और मिट्टी के थे और कभी एक मंज़िल से ऊपर नहीं। किसी ने कल्पना भी नहीं की कि यह भूमि एक दिन दौलत और निर्माण का केन्द्र बन जाएगी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

प्रायद्वीप में 1930 के दशक में तेल मिला, और दो पीढ़ियों के भीतर उसकी हालत बदल गई। आज दुबई में **बुर्ज ख़लीफ़ा** 828 मीटर ऊँचा खड़ा है, दुनिया की सबसे ऊँची इमारत; निर्माणाधीन **जेद्दा टॉवर** एक किलोमीटर से ऊपर जाता है; और मक्का के **अबराज अल-बैत** धरती की सबसे विशाल इमारतों में हैं। "सबसे ऊँची" के लिए होड़ करना ख़ास तौर पर उसी क्षेत्र की एक घोषित विशेषता बन चुकी है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक ही वाक्य में तीन बन्धन इसे किसी आम सूत्र के बजाय एक भविष्यवाणी बना देते हैं। पहला, **करने वालों की पहचान** का निर्धारण — "नंगे पाँव, नंगे बदन, कंगाल भेड़ चराने वाले": बनाने वाले **स्वयं ग़रीब** हैं, न कि निर्माण की लम्बी परम्परा वाली कोई धनी क़ौम। दूसरा, क्रिया **"होड़ करना"** — एक पारस्परिक रूप जो विशेष रूप से **ऊँचाई में प्रतिद्वंद्विता** बताता है, केवल ऊँचा बनाना नहीं। तीसरा, कि यह **एक विराट बदलाव की निशानी** के तौर पर दिया गया, यानी ऐसी चीज़ जो साधारण से इतनी बाहर हो कि शुभ-अशुभ संकेत गिनी जाए। और जो कोई एक बंजर रेगिस्तान को देखकर यह भविष्यवाणी करे कि उसके लोग एक दिन धरती की सबसे ऊँची इमारत के लिए होड़ करेंगे, वह अनुमान से नहीं बोल रहा।

82 यहाँ तक कि अरबों की भूमि फिर चरागाहों और नदियों में लौट आए

क़ियामत तब तक नहीं आएगी जब तक धन इतना अधिक और उमड़ता हुआ न हो जाए, और जब तक अरबों की भूमि फिर चरागाहों और नदियों में न लौट आए।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

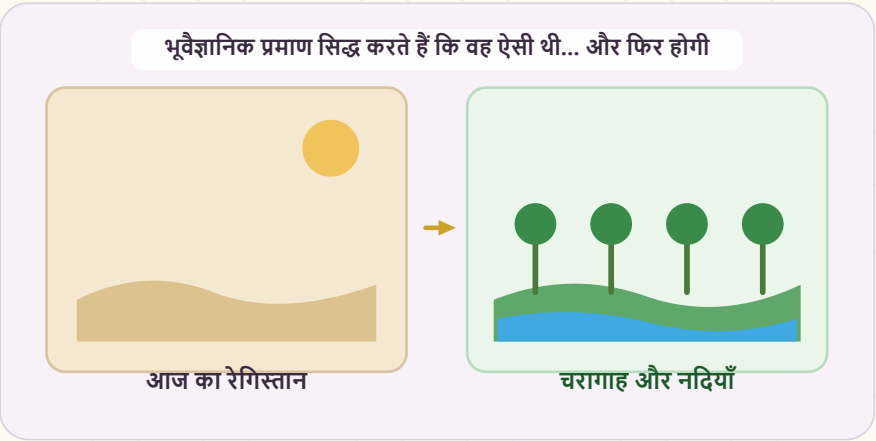

अरब की रेत के नीचे प्राचीन नदियों की तलहटियाँ हैं, जिन्हें उपग्रहों ने उघाड़ा

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि अरबों की भूमि हरे चरागाहों और बहती नदियों में **लौट** आएगी। और कुंजी शब्द है **"लौटना"** — यानी वह पहले ऐसी रही है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब प्रायद्वीप लिखित इतिहास से भी पहले से बंजर रेगिस्तान रहा है, और उसके लोग उसकी कोई दूसरी हालत जानते ही न थे। उसके सुदूर जलवायु-अतीत को जानने का कोई साधन ही न था। और यह कहना कि वह चरागाहों में लौट आएगी — **इसके लिए यह माँगना पड़ता है कि वह कभी चरागाह रही हो** — और ख़बर यहीं है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

उपग्रहों और भूमि-भेदी रडार ने अरब की रेत के नीचे **प्राचीन नदी-तलहटियों का एक विशाल जाल** उघाड़ा है, जिन्हें जीवाश्म नदियाँ कहते हैं, और जिनमें सबसे बड़ी वादी अल-बातिन और वादी अर-रुम्मा हैं। पुरा-जलवायु अध्ययनों ने सिद्ध किया है कि प्रायद्वीप बार-बार आर्द्र युगों से गुज़रा (आख़िरी लगभग 6,000 वर्ष पहले) जिनमें झीलें, नदियाँ, चरागाह और बड़े पशु थे। वहाँ सूखी झीलों की तलहटियों के पास दरियाई घोड़े और मगरमच्छ की हड्डियाँ तथा पत्थर के औज़ार मिले हैं। और जलवायु-चक्र भविष्य में आर्द्रता के लौटने की भविष्यवाणी करते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक ही शब्द चमत्कार उठाए हुए है: **"लौटना"**। वह एक साथ दो बातों की पुष्टि करता है: एक ऐसे भूवैज्ञानिक **अतीत** की ख़बर जिसका किसी को कोई ज्ञान न था, और एक ऐसे **भविष्य** की भविष्यवाणी जो अभी आया नहीं। यदि उसने "बन जाएगी" कहा होता, तो वह केवल भविष्य के बारे में एक कथन होता। और स्वयं हदीस के भीतर के संकेत पर ध्यान दीजिए: उसने इसे "धन इतना अधिक और उमड़ता हुआ हो जाए" से जोड़ दिया — और वह आधा भाग तेल के ज़रिये सचमुच पूरा हो चुका है, और वही आज वहाँ के विशाल वनरोपण तथा कृषि परियोजनाओं को पैसा देता है।

ज्वालामुखी

83 एक आग जो हिजाज़ की भूमि से निकलेगी

क़ियामत तब तक नहीं आएगी जब तक हिजाज़ की भूमि से एक ऐसी आग न निकले जो बुसरा के ऊँटों की गर्दनें रोशन कर दे।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

एक ऐतिहासिक ज्वालामुखी विस्फोट, जो स्रोतों में और लावा की परतों में दर्ज है

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने ख़बर दी कि हिजाज़ की भूमि से एक ऐसी आग निकलेगी जिसका प्रकाश सैकड़ों किलोमीटर दूर शाम के नगर **बुसरा** तक पहुँचेगा। और यह 1256 ईस्वी में हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हिजाज़ एक रेगिस्तानी भूमि है जिसके लोगों ने अपने जीवन में कभी कोई ज्वालामुखी देखा ही न था। "ज्वालामुखी" शब्द ही उनके माहौल में अनजान था। और **निकलने की जगह** तथा **प्रकाश की पहुँच** को किसी दूसरे देश के एक विशेष नगर का नाम लेकर निर्धारित कर देना — ऐसा विवरण निश्चय के बिना कहा ही नहीं जाता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

जुमादा अल-आख़िरा 654 हिजरी / जून 1256 ईस्वी में मदीना के पूर्व में **हर्रत रहत** में एक ज्वालामुखी फटा और लगभग पचपन दिन चलता रहा, और उसका लावा दसियों किलोमीटर बहा। उसके समकालीन इतिहासकारों — अबू शामा, क़ुर्तुबी, इब्न कसीर और नववी — ने उसका वर्णन किया और दर्ज किया कि **उसका प्रकाश बुसरा, तैमा और मक्का से देखा गया**, और लोग रात में उससे देखते थे। भूवैज्ञानिकों ने हर्रत रहत के लावा-प्रवाहों का अध्ययन किया और उनकी तिथि इसी घटना से जोड़ी है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

वर्णन की बारीकी पर ध्यान दीजिए: उसने केवल "एक बड़ी आग" नहीं कहा, बल्कि **दिखाई देने वाला असर** निर्धारित किया: "**बुसरा के ऊँटों की गर्दनें रोशन कर दे**"। और बुसरा दक्षिणी शाम का एक नगर है, मदीना से लगभग एक हज़ार किलोमीटर दूर। और ख़ास तौर पर **ऊँटों की गर्दनों** का विवरण तब तक विचित्र लगता है जब तक समझा न जाए: क्षितिज पर दूर की चमक उन्हीं चीज़ों को रोशन करती है जो क्षितिज-रेखा से ऊपर उठी हों, और क़ाफ़िले में सबसे ऊँची चीज़ ऊँट की गर्दन है। और छह सदी बाद इतिहासकारों ने ठीक यही वर्णन किया। यह घटना कई स्वतंत्र स्रोतों में दर्ज है और चट्टान में भूवैज्ञानिक रूप से पुष्ट है।

84 समय आपस में सिमट आएगा

क़ियामत तब तक नहीं आएगी जब तक समय सिमट न जाए, यहाँ तक कि वर्ष महीने जैसा हो जाए, महीना सप्ताह जैसा, और सप्ताह दिन जैसा।

अहमद और तिर्मिज़ी की रिवायत — अलबानी ने सहीह ठहराया

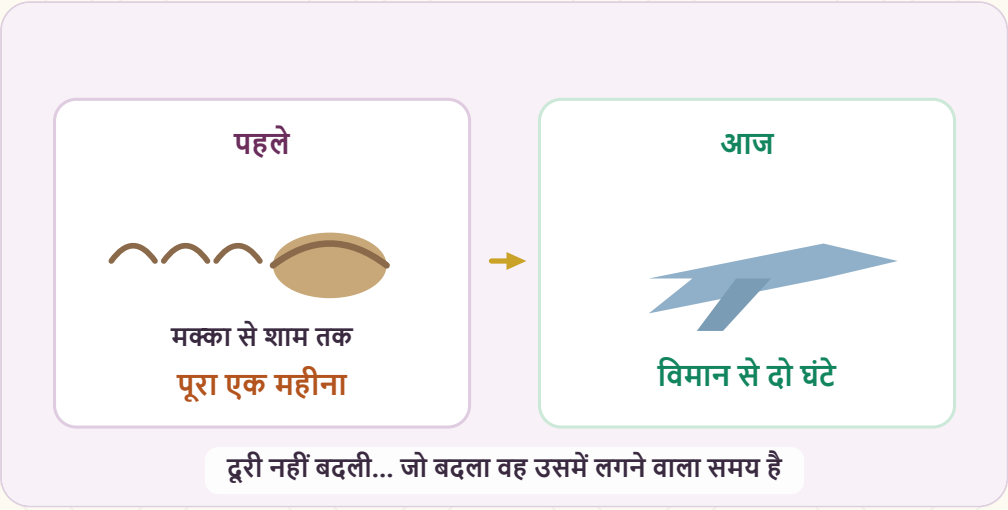

जो काम पहले एक महीना लेता था अब दो घंटे लेता है

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि समय **आपस में सिमट आएगा**, यहाँ तक कि वर्ष महीने जैसा और महीना सप्ताह जैसा हो जाएगा। और हम यही जी रहे हैं: जिसे कभी महीने चाहिए थे उसे अब घंटे चाहिए।

उस समय लोग क्या मानते थे?

सृष्टि के आरम्भ से मानव-अनुभव में समय अटल था। ऊँट और घोड़े से यात्रा, महीनों रास्ते में रहने वाला पत्र, मौसमों बाद पहुँचने वाली ख़बर। यह कल्पना से बाहर था कि ये अनुपात कभी बदल भी सकते हैं — ये तो जीवन की अटल चीज़ों में थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

जो रास्ता कोई क़ाफ़िला महीने में पार करता था उसे विमान दो घंटे में पार करता है। जो पत्र महीने लेता था वह अब एक सेकंड से भी कम में पहुँच जाता है। जिसके लिए पुस्तकालयों में जीवन भर खोज चाहिए थी वह मिनटों में हो जाता है। यह त्वरण समाजशास्त्र में **"समय-स्थान संपीडन"** नाम से अध्ययन का विषय बन चुका है, और यह एक स्थापित शब्द है जो परिवहन तथा संचार की गति का दूरी की अनुभूति पर पड़ने वाला असर बताता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार स्वयं शब्द-विन्यास में है। उसने न कहा "बरकत घट जाएगी" और न "ज़िन्दगी जल्दी गुज़र जाएगी" — और ये दोनों सम्भव तथा क़बूल करने योग्य पठन थे। उसने इसके बजाय **एक क्रमिक गणितीय अनुपात** का रूप इस्तेमाल किया: वर्ष → महीना, महीना → सप्ताह, सप्ताह → दिन, दिन → घंटा। यानी समय की इकाई हर क़दम पर लगभग दसवें हिस्से तक सिकुड़ती है। और अरबी क्रिया एक पारस्परिक रूप है जो सिरों के आपस में निकट आने का अर्थ देती है — यानी दूरियों के सिकुड़ने का एक सटीक वर्णन, न कि केवल बरकत के घटने का। और बीसवीं सदी में समाजशास्त्रियों का गढ़ा शब्द "समय-स्थान संपीडन" तो लगभग इस वाक्यांश का शाब्दिक अनुवाद ही है।

85 धन इतना अधिक कि कोई सदक़ा लेने वाला ही न मिले

क़ियामत तब तक नहीं आएगी जब तक तुममें धन इतना अधिक और उमड़ता हुआ न हो जाए कि धन वाला इस बात से परेशान हो जाए कि उसका सदक़ा कौन क़बूल करेगा।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

वह क़ौम जो भूख से अपने पेट पर पत्थर बाँधती थी

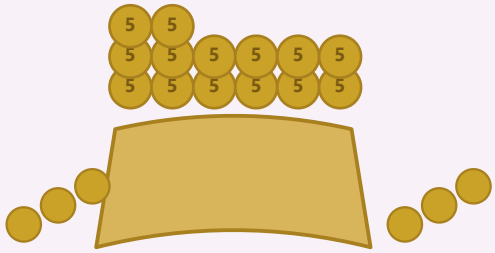

बहुतायत की समस्याएँ... अभाव की नहीं

नबी ﷺ के पेट पर पत्थर बाँधने से... लेकर ऐसे अतिरेक तक जिसका कोई लेने वाला नहीं

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि एक समय आएगा जब धन इतना अधिक होगा कि **धन वाले को अपना सदक़ा क़बूल करने वाला कोई ग़रीब ढूँढ़ना मुश्किल हो जाएगा**। यह इतिहास में एक से अधिक बार हो चुका है, और आज भी हो रहा है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ये शब्द ऐसे समाज में कहे गए **जो सचमुच भूखा था**: सहाबा ने ख़न्दक़ के दिन पेट पर पत्थर बाँधे थे, और अहले-सुफ़्फ़ा को अपना बदन ढाँकने को कपड़ा तक न मिलता था। उस समय यह विचार कि धन इतना उमड़ पड़े कि कोई ग़रीब ही न मिले — कल्पना से बाहर था। और उस समय तक का समूचा मानव इतिहास अभाव का इतिहास था, बहुतायत का नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह **उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ की ख़िलाफ़त** में स्पष्ट रूप से हुआ, यहाँ तक कि इतिहासकारों ने दर्ज किया कि उनके कारिन्दे धन लिए घूमते थे और कोई लेने वाला नहीं मिलता था, तो उन्होंने उससे ग़ुलाम आज़ाद कराए और बिन-ब्याहों के विवाह कराए। और हमारे अपने युग में: खाड़ी के वे देश जहाँ धन इतना उमड़ता है कि चुनौती **ज़कात के लेने वाले ढूँढ़ना** बन जाती है, अन्तरराष्ट्रीय दानी कोष जो ऐसे अतिरेक की घोषणा करते हैं जिसे वे अपने यहाँ बाँट ही नहीं पाते, और वे आधुनिक आर्थिक समस्याएँ जिनके नाम **"अति-उत्पादन"** और "अति-उपभोग" हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

भविष्यवाणी यहाँ "लोग अमीर हो जाएँगे" नहीं है — जो एक साधारण अपेक्षा होती — बल्कि एक पूरी तरह उलटा समीकरण है: **कि लेना नहीं, देना समस्या बन जाए**। और यह समाज की बनावट में एक उलटाव है, केवल हालात का सुधरना नहीं। और जिस अरबी क्रिया का अनुवाद "परेशान हो जाए" है वह सूक्ष्म है: उसका अर्थ है उसे चिन्ता में डालना और उसका मन घेर लेना — तो समस्या मनोवैज्ञानिक और प्रबन्धकीय है, भौतिक नहीं। और समकालीन ज़कात-कोषों का ठीक यही वर्णन है जब वे ऐसे अतिरेक की घोषणा करते हैं जिसे भेजने की कोई जगह नहीं। और यह ऐसे लोगों से कहा गया जिन्हें अपनी रोज़ की रोटी नहीं मिलती थी।

86 तुम मिस्र फ़तह करोगे — तो उसके लोगों के साथ भलाई करना

तुम मिस्र फ़तह करोगे, वह भूमि जिसमें क़ीरात का नाम लिया जाता है। तो जब तुम उसे फ़तह करो तो उसके लोगों के साथ भलाई करना, क्योंकि उनका एक अहद है और एक रिश्तेदारी भी।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

मिस्र: नबी ﷺ ने उसके बारे में उसकी विजय से बीस वर्ष से भी अधिक पहले हिदायत दे दी

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि मुसलमान **मिस्र फ़तह करेंगे**, और उसमें दाख़िल होने से पहले ही उन्हें उसके लोगों के साथ भलाई करने की हिदायत दी। और उसकी एक पहचान भी बताई: कि वह ऐसी भूमि है जहाँ **क़ीरात** चलता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

मिस्र उस समय एक क़िलाबन्द रोमी प्रान्त था, और इस्लामी राज्य एक नई चीज़ थी जो अभी प्रायद्वीप से बाहर निकली भी न थी। अरब मिस्र को व्यापार के ज़रिये जानते थे और उसकी व्यवस्थाओं के ब्योरे नहीं जानते थे। और किसी देश के लोगों के बारे में **उसकी विजय से पहले** हिदायत देना, यह साफ़ कह देना है कि वह फ़तह होगा।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मिस्र सन् 20 हिजरी में उमर की ख़िलाफ़त के दौरान अम्र बिन अल-आस के हाथों फ़तह हुआ। रहा **क़ीरात**, तो वह यूनानी-मिस्री मूल की एक माप-इकाई है, जो आज तक मिस्र में ज़मीन के लिए (एक क़ीरात = फ़ेद्दान का 1/24) और सोने के लिए (21 और 24 कैरट) इस्तेमाल होती है। यह एक ऐसी इकाई है **जो इस चलन के साथ किसी दूसरे अरब देश में इस्तेमाल नहीं होती**। इतिहासकार यह दर्ज करते रहे कि मिस्र के लोग इसी शब्द से पहचाने जाते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

जो पहचान बताई गई वही प्रमाण है: "**वह भूमि जिसमें क़ीरात का नाम लिया जाता है**"। और यह ऐसे देश के लोगों के किसी स्थानीय चलन से पहचान कराना है जिसमें मुसलमान अभी दाख़िल भी नहीं हुए थे — ऐसा विवरण वही बताता है जो जानता हो। फिर उससे भी विलक्षण कारण: "क्योंकि उनका एक **अहद है और एक रिश्तेदारी भी**" — और रिश्तेदारी से मुराद हाजरा हैं, इस्माईल अलैहिस्सलाम की माँ, जो मिस्री थीं, और मारिया क़िब्तिया, नबी ﷺ के बेटे इब्राहीम की माँ। तो हिदायत एक वास्तविक वंश-सम्बन्ध पर टिकी है। किसी क़ौम के साथ भलाई की हिदायत, उनके देश के फ़तह होने से बीस वर्ष पहले — और वह भी ऐसे व्यक्ति से जिसके पास कहने के दिन कोई सेना ही न थी।

नामज़द व्यक्ति

87 उवैस क़रनी — एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन जिसे उन्होंने कभी देखा ही नहीं

तुम्हारे पास यमन वालों की कुमुक के साथ उवैस बिन आमिर आएगा, मुराद से, फिर क़रन से। उसे कोढ़ था और वह उससे ठीक हो गया सिवाय एक दिरहम भर जगह के। उसकी एक माँ है जिसकी वह बहुत सेवा करता है।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

पाँच निशानियाँ, पहले से निर्धारित

- **उसका नाम: उवैस बिन आमिर**
- **उसका क़बीला: मुराद, फिर क़रन**
- **उसे कोढ़ था और वह ठीक हो गया**
- **उसमें से एक दिरहम भर जगह बाक़ी रही**
- **अपनी माँ का सेवक, और कुछ नहीं**

उमर ने उसे वर्षों बाद इन सभी निशानियों के साथ पाया

उमर बिन ख़त्ताब हज के मौसमों में उसके बारे में पूछते रहे यहाँ तक कि उसे पा लिया

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन किया **जिसे उन्होंने कभी देखा न था और कभी मिले न थे**: उसका नाम, उसका क़बीला, यह कि वह एक बीमारी से ठीक हो चुका है सिवाय एक सिक्के भर के छोटे-से धब्बे के, और यह कि वह अपनी माँ की सेवा करता है। फिर उमर ने उसे इन सब निशानियों के साथ पा लिया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उवैस यमन का एक गुमनाम व्यक्ति था, न कोई हैसियत न कोई शोहरत, और वह नबी ﷺ से कभी मिला ही नहीं (इसीलिए वह ताबिईन में गिना जाता है, सहाबा में नहीं)। यमन और मदीना के बीच लम्बी दूरी है, और वहाँ के अलग-अलग लोगों के हालात जानने का कोई साधन न था। और वर्णन में **एक अत्यन्त सूक्ष्म शारीरिक निशानी** भी है जिसे केवल वही जान सकता है जिसने उसे बिना कपड़ों के देखा हो।

आज विज्ञान क्या कहता है?

उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु यमन वालों की कुमुक में उवैस के बारे में साल दर साल पूछते हुए निकलते रहे यहाँ तक कि उनसे मिले। उन्होंने उनका नाम और क़बीला पूछा, फिर कोढ़ के बारे में पूछा और मामला ठीक वैसा ही पाया जैसा बताया गया था, फिर पूछा: "क्या तुम्हारी माँ हैं?" उन्होंने कहा हाँ। तो उमर ने उनसे अपने लिए मग़फ़िरत की दुआ माँगी। यह पूरी कहानी **सहीह मुस्लिम** में है, और इस विषय पर रिवायत की गई सबसे भरोसेमन्द चीज़ों में है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक ही व्यक्ति में पाँच स्वतंत्र निशानियाँ आ मिलीं। नाम और वंश पर तो कोई अनुमान लगाने वाला निशाना बैठा भी सकता था, पर चौथी निशानी निर्णायक है: "**उसे कोढ़ था और वह उससे ठीक हो गया सिवाय एक दिरहम भर जगह के**" — एक बीती हुई बीमारी का वर्णन, उससे ठीक होने का, और एक निर्धारित नाप के बचे हुए निशान का। एक ही निशानी में तीन सूचनाएँ, और वह भी किसी दूसरे देश के एक व्यक्ति के शरीर के बारे में। और विलक्षण बात यह है कि नबी ﷺ ने उमर को हिदायत दी कि **उससे दुआ माँगना** — तो अमीरुल-मोमिनीन वर्षों एक गुमनाम चरवाहे को ढूँढ़ते रहे कि वह उनके लिए मग़फ़िरत माँगे। यदि एक भी निशानी ग़लत होती, तो पूरी ख़बर सहाबा की आँखों के सामने ढह जाती।

88

नौसैनिक इतिहास

समुद्र पर सवार होने वाली पहली सेना

मेरी उम्मत की पहली सेना जो समुद्र के रास्ते अभियान करेगी उसने अपना बदला पक्का कर लिया ... फिर उन्होंने कहा: तुम पहलों में हो।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

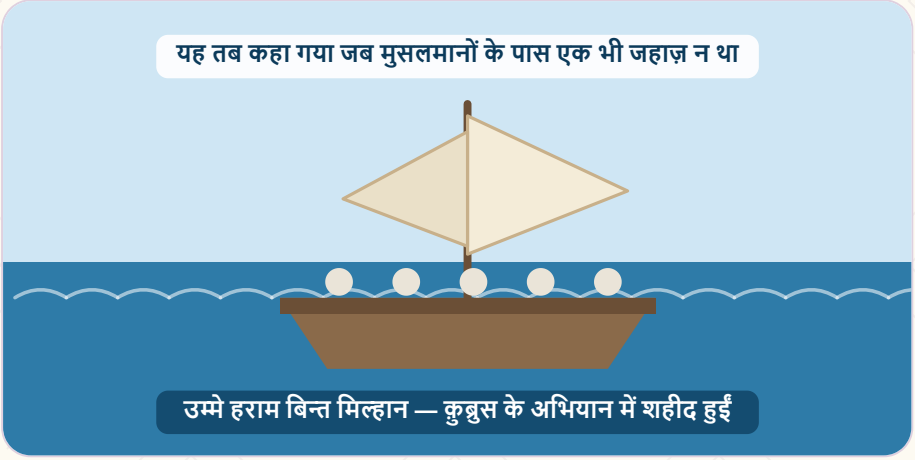

इस्लाम का पहला नौसैनिक अभियान — क़ुब्रुस (साइप्रस), 28 हिजरी

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने स्वप्न में अपनी उम्मत की एक सेना को **समुद्र पर सवार** देखा। उम्मे हराम ने उनसे दुआ माँगी कि वे उनमें हों, तो उन्होंने कहा: **"तुम पहलों में हो।"** और वैसा ही हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब ज़मीन के लोग थे, समुद्र के नहीं। उनके पास न जहाज़ थे न नौसैनिक युद्ध का कोई ज्ञान, और उनकी संस्कृति में समुद्र एक डरावनी चीज़ था जिससे बचा जाता था। बल्कि उमर बिन ख़त्ताब ने अपनी पूरी ख़िलाफ़त में समुद्री अभियानों की इजाज़त ही नहीं दी, लोगों के डर से। तो किसी इस्लामी नौसैनिक शक्ति की भविष्यवाणी अत्यन्त असम्भव थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सन् 28 हिजरी में उस्मान बिन अफ़्फ़ान ने मुआविया को समुद्र में जाने की इजाज़त दी, और पहला इस्लामी बेड़ा बना और उसने **क़ुब्रुस** पर छापा मारा। **उम्मे हराम बिन्त मिल्हान** रज़ियल्लाहु अन्हा उसके साथ निकलीं, और जब वे उतरीं तो उनके लिए एक सवारी लाई गई जिसने उन्हें गिरा दिया, और वे वहीं देहान्त पा गईं और वहीं दफ़्न हुईं। उनकी क़ब्र आज तक साइप्रस में हाला सुल्तान तेक्के के नाम से जानी जाती है, और लोग उसे देखने जाते हैं। यह कहानी दोनों सहीह संग्रहों में है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक छोटे वाक्य में सूचना की तीन परतें। पहली: कि उम्मत की **कोई नौसैनिक सेना** होगी भी — एक रेगिस्तानी क़ौम जिसके पास जहाज़ ही नहीं। दूसरी: कि उसमें **एक विशेष स्त्री होगी** — वह स्त्री जो उस समय मदीना में थी और जिसके मन में समुद्र का कोई ख़्याल तक न था। तीसरी, और सबसे सूक्ष्म: कि वह **"पहलों"** में होगी, बाद वालों में नहीं — यानी ख़ास तौर पर **पहले ही अभियान** में, किसी बाद के छापे में नहीं। उन्होंने दुआ माँगी कि उस दूसरे गिरोह में हों जो उन्होंने देखा, तो उन्होंने कहा: "तुम पहलों में हो।" तो निर्धारण ठीक वहीं बैठा जहाँ रखा गया था। और वे उसी अभियान में देहान्त पा गईं, उस ख़बर के लगभग बीस वर्ष बाद।

89 ख़वारिज — और वह आदमी जिसका एक हाथ स्त्री के स्तन जैसा था

> तुममें एक ऐसी क़ौम उठेगी जिसकी नमाज़ के आगे तुम अपनी नमाज़ को हक़ीर समझोगे ... वे क़ुरआन पढ़ेंगे पर वह उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा; वे दीन से यूँ निकल जाएँगे जैसे तीर शिकार के आर-पार निकल जाता है।
>
> **बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत**

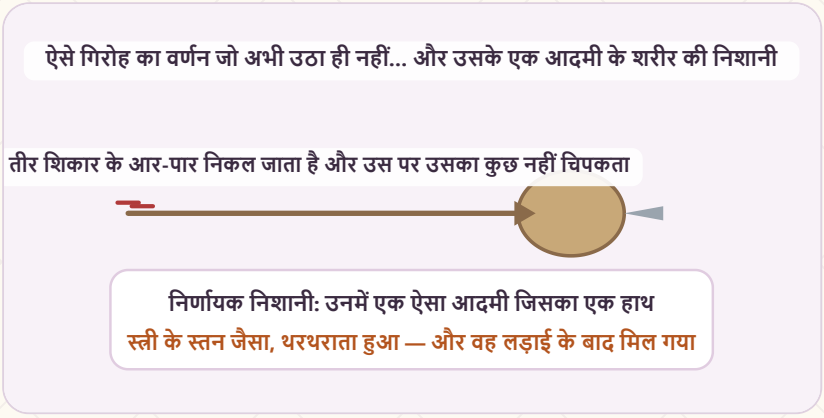

अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मारे गए लोगों में उसे ढूँढ़ने का हुक्म दिया, यहाँ तक कि वह मिल गया

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने एक ऐसे गिरोह का वर्णन किया जो मुसलमानों में से उठेगा: बाहर से इबादत में कड़ा, क़ुरआन पढ़ने वाला, और फिर भी **दीन से निकल जाने वाला**। और उन्होंने एक निशानी बताई: उनमें एक ऐसा आदमी होगा जिसका एक हाथ विकृत और अधूरा होगा।

उस समय लोग क्या मानते थे?

समुदाय में न कोई सम्प्रदाय था न कोई फूट। और यह विचार कि कोई क़ौम **कड़ी इबादत और दीन से निकल जाने को एक साथ जोड़ ले** — बाहर से अपने आप में विरोधाभासी था; अपेक्षा तो यही होती है कि भटका हुआ इबादत में लापरवाह हो, उसमें हद से बढ़ा हुआ नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

ख़वारिज अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में प्रकट हुए, जो मुसलमानों को काफ़िर कहते और उनका ख़ून हलाल ठहराते थे, जबकि वे लम्बी नमाज़ों और अधिक तिलावत के लिए प्रसिद्ध थे। अली ने सन् 38 हिजरी में **नहरवान** में उनसे युद्ध किया। युद्ध के बाद उन्होंने उस वर्णित व्यक्ति को ढूँढ़ने का हुक्म दिया, और उसे मारे गए लोगों में ढूँढ़ा गया यहाँ तक कि वह मिल गया: एक ऐसा आदमी जिसका एक हाथ स्त्री के स्तन जैसा था। अली ने तकबीर कही और कहा: "अल्लाह ने सच कहा और उसके रसूल ने सन्देश पहुँचा दिया।" यह कहानी सहीह मुस्लिम में है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

उपमा स्वयं अत्यन्त सूक्ष्म है: "**वे दीन से यूँ निकल जाएँगे जैसे तीर शिकार के आर-पार निकल जाता है**"। जब तीर किसी शिकार किए गए पशु के आर-पार निकल जाता है तो वह **साफ़ निकलता है, उस पर न ख़ून चिपका होता है न मांस** — यानी उस व्यक्ति का वर्णन जो दीन के आर-पार गुज़र जाता है और उसमें से कुछ भी साथ नहीं रखता, चाहे वह कितनी ही तेज़ी से गुज़रे। पर निर्णायक चीज़ है **शारीरिक निशानी**: एक विशेष व्यक्ति के हाथ में एक दुर्लभ विकृति, एक ऐसे गिरोह में जो अभी पैदा नहीं हुआ, एक ऐसे युद्ध में जो अभी लड़ा नहीं गया। और यह ऐसी निशानी है **जिसकी तुरन्त जाँच हो सकती थी** — इसीलिए अली ने स्वयं उसे मारे गए लोगों में ढूँढ़ा। यदि वह न मिलती, तो ख़बर एक पूरी सेना के सामने ढह जाती।

90 एक ऐसी क़ौम जिसकी आँखें छोटी और चेहरे चौड़े हैं

क़ियामत तब तक नहीं आएगी जब तक तुम एक ऐसी क़ौम से न लड़ो जिसके जूते बालों के हैं, और जब तक तुम तुर्कों से न लड़ो — छोटी आँखों वाले, लाल चेहरों वाले, चपटी नाकों वाले, मानो उनके चेहरे तह-पर-तह चढ़ी हुई ढालें हों।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

ऐसी क़ौम का सूक्ष्म नस्ली वर्णन जिसे अरबों ने उस दिन देखा ही न था

“छोटी आँखें · चौड़े चेहरे · चपटी नाकें”

मंगोल आक्रमण — सातवीं हिजरी सदी

मध्य एशिया की क़ौमों के नाक-नक़्श, अरबों के उन्हें देखने से सदियों पहले वर्णित

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने एक ऐसी क़ौम का वर्णन किया जिससे मुसलमान लड़ेंगे, और **उनके चेहरों का आकार** बताया: छोटी आँखें, चौड़े गोल चेहरे, छोटी चपटी नाकें। और ये मध्य एशिया की क़ौमों तथा मंगोलों के नाक-नक़्श हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

प्रायद्वीप के अरब केवल ख़ुद को, रोमियों को, फ़ारसियों को और हबशियों को देखते थे — और इन सबके नाक-नक़्श इस वर्णन से बिलकुल अलग हैं। एशियाई घास-मैदानों की क़ौमें फ़ारस से भी आगे सुदूर पूरब में थीं, और उनकी कोई ख़बर प्रायद्वीप तक नहीं पहुँचती थी। अरबों और उनके बीच न कोई सम्पर्क था, न कोई युद्ध, न कोई व्यापार।

आज विज्ञान क्या कहता है?

हदीस ने तीन ऐसे शारीरिक लक्षण बताए जो आज पूर्वी और मध्य एशिया की क़ौमों के विशिष्ट लक्षण माने जाते हैं: **एपिकैन्थिक वलन के साथ सँकरी पलक-दरार**, **उभरी गाल-हड्डियों वाला चौड़ा चपटा चेहरा**, और **छोटी, नीची पुल वाली नाक**। और लड़ाई सचमुच हुई: सातवीं इस्लामी सदी का मंगोल आक्रमण, जिसने 656 हिजरी में बग़दाद तबाह किया और फिर 658 हिजरी में **ऐन जालूत** में पराजित हुआ। और उससे पहले मुसलमान पहली सदी से ही मावराउन्नहर में तुर्कों से लड़ते आए थे।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह एक **मानवशास्त्रीय** वर्णन है, न कोई राजनीतिक या सैनिक। और वह किसी एक ऐसे लक्षण पर नहीं रुका जिस पर संयोग से निशाना बैठ जाए, बल्कि **चार साथ-साथ आने वाले लक्षण** इकट्ठे किए, जो मिलकर एक विशेष चेहरे का प्रकार बनाते हैं जिसे आज जनसंख्या-विज्ञान जानता है। और अन्तिम उपमा अत्यन्त सूक्ष्म है: “मानो उनके चेहरे **तह-पर-तह चढ़ी हुई ढालें** हों” — और खाल की परतों से मढ़ी ढाल चौड़ी, गोल और थोड़ी उभरी हुई हो जाती है। अरब के रेगिस्तान का एक व्यक्ति चीन के भी आगे रहने वाली किसी क़ौम के नाक-नक़्श बताए, और फिर यह ख़बर दे कि उसकी उम्मत उनसे लड़ेगी — इसमें अनुमान का कोई हिस्सा ही नहीं।

समाज

91 वे शराब पिएँगे और उसे किसी और नाम से पुकारेंगे

मेरी उम्मत के कुछ लोग अवश्य शराब पिएँगे, और उसे उसके नाम के सिवा किसी और नाम से पुकारेंगे।

अबू दाऊद और इब्न माजा की रिवायत — अलबानी ने सहीह ठहराया

नाम बदल जाता है ताकि वर्जित चीज़ लेना आसान हो जाए

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि उनकी उम्मत के कुछ लोग शराब पिएँगे, पर वे **उसे शराब नहीं कहेंगे** — वे उसे दूसरे नाम देंगे ताकि वह गले उतर जाए और उसे जायज़ ठहराया जा सके।

उस समय लोग क्या मानते थे?

शराब को खुलेआम उसके अपने नाम से पुकारा जाता था और कविता में उस पर गर्व किया जाता था। न कोई उससे शरमाता था न किसी को उसका नाम छिपाने की ज़रूरत थी। तो हदीस एक विशेष **मनोवैज्ञानिक और सामाजिक व्यवहार** की भविष्यवाणी करती है: कि लोग निषेध को मानेंगे और फिर नाम बदलकर उससे बच निकलेंगे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह समाजशास्त्र और भाषाविज्ञान में **"शिष्टोक्ति"** नाम से देखी जाने वाली एक परिघटना है: किसी चीज़ का नाम बदल देना ताकि उसका असर हलका हो जाए या किसी निषेध से बच निकला जाए। हमारी दुनिया मिसालों से भरी है: "स्पिरिट", "स्वास्थ्य-मदिरा", अल्कोहल वाले "ऊर्जा पेय", "किण्वित इमली", और "अल्कोहल-मुक्त बीयर" जिसमें फिर भी उसका एक अंश होता है। यही सिद्धान्त सूद के लिए ("ब्याज", "निवेश प्रतिफल") और दूसरी वर्जित चीज़ों के लिए भी इस्तेमाल होता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

भविष्यवाणी यहाँ किसी **कर्म** की नहीं, बल्कि **एक भाषाई चाल** की है — और यह कहीं अधिक बारीक और कठिन बात है। "कुछ लोग शराब पिएँगे" कहना तो एक अपेक्षित कथन है। पर **बच निकलने का तरीक़ा** निर्धारित कर देना — हुक्म से इनकार नहीं, बल्कि नाम बदल देना — एक ऐसी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक क्रियाविधि का वर्णन है जो उस समाज में दिखाई तक नहीं देती थी। और आज वह समाज-भाषाविज्ञान का एक पूरा अध्याय है। और यह उस दूसरी हदीस से मेल खाता है जो उसकी निन्दा करती है जो "अपने दिए हुए किसी नाम से हराम को हलाल कर ले" — एक ही नियम, चाहे उसके रूप कितने ही हों।

सभ्यताएँ

92 तुम अपने से पहले वालों के रास्तों पर अवश्य चलोगे

तुम अपने से पहले वालों के रास्तों पर अवश्य चलोगे, बालिश्त दर बालिश्त और हाथ दर हाथ, यहाँ तक कि यदि वे किसी गोह के बिल में घुसे तो तुम भी उनके पीछे घुसोगे।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

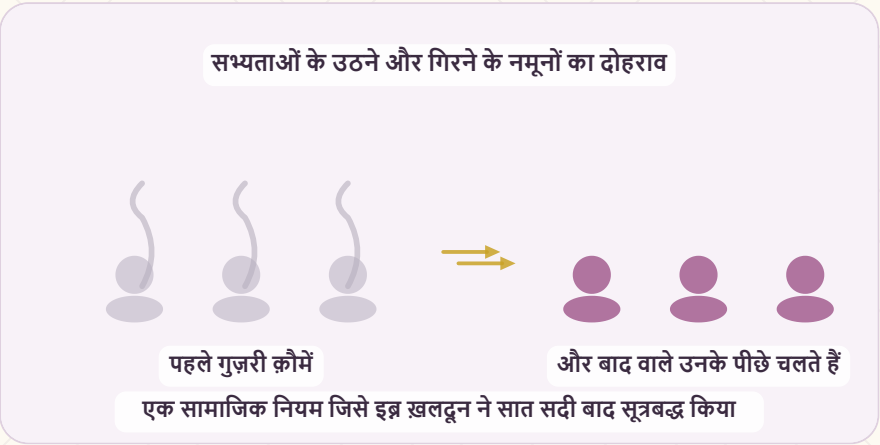

क़ौमें अपने पूर्ववर्तियों की ग़लतियाँ ऐसी हद तक दोहराती हैं कि इतिहासकार चकित रह जाते हैं

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि यह उम्मत अपने से पहले की क़ौमों की **क़दम-दर-क़दम** नक़ल करेगी, यहाँ तक कि उन बेतुकी बातों में भी जिनसे कोई लाभ ही नहीं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

प्रचलित धारणा यही थी कि हर क़ौम का अपना रास्ता होता है, और मुसलमान अपने दीन के कारण उन चीज़ों में गिरने से अलग रखे गए हैं जिनमें दूसरे गिरे। बिना किसी अपवाद के सभी क़ौमों की चाल पर शासन करने वाले किसी "नियम" की कोई धारणा ही न थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह वही चीज़ है जिसे ऐतिहासिक समाजशास्त्र **सभ्यताओं के चक्र** कहता है। इब्न ख़लदून ने सात सदी बाद अपने "मुक़द्दिमा" में इसे सूत्रबद्ध किया, और इसी पर ओस्वाल्ड श्पेंग्लर तथा अर्नोल्ड टॉयनबी ने बीसवीं सदी में अपने सिद्धान्त खड़े किए: **क़ौमें उत्थान, विलासिता और विघटन के एक-जैसे चरणों से गुज़रती हैं**, और अपने पूर्ववर्तियों की ग़लतियाँ लगभग अनिवार्य ढंग से दोहराती हैं। समाजशास्त्रियों ने व्यक्तिगत व्यवहार में भी एक समानान्तर परिघटना देखी है जिसे उन्होंने **झुंड-व्यवहार** नाम दिया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

बारीकी अन्तिम वाक्य में है: "**यहाँ तक कि यदि वे किसी गोह के बिल में घुसे तो तुम भी उनके पीछे घुसोगे**"। हदीस उस नक़ल की बात नहीं कर रही जो लाभदायक हो — वह तो उचित और प्रशंसनीय होती — बल्कि **उसकी नक़ल की जिसमें न कोई लाभ है न कोई अर्थ**, बल्कि जिसमें साफ़ नुक़सान है। और समाजशास्त्री आज ठीक इसी का वर्णन करते हैं जब वे उन व्यवहार-फ़ैशनों की बात करते हैं जो बिना किसी तर्कसंगत कारण के समाजों को बहा ले जाते हैं। और क्रिया के ज़ोरदार क़सम-रूप पर भी ध्यान दीजिए: यह इस बात की पुष्टि है कि ऐसा होगा, न कि किसी सम्भावना से चेतावनी। और ऐसा हुआ है, ऐसे कि कोई इनकार नहीं कर सकता।

93

शक्ति-सन्तुलन

क़ौमें एक-दूसरे को बुलाएँगी — और बाढ़ का कूड़ा

क़रीब है कि क़ौमें तुम्हारे विरुद्ध एक-दूसरे को यूँ बुलाएँ जैसे खाने वाले अपने थाल की ओर एक-दूसरे को बुलाते हैं। किसी ने कहा: क्या उस दिन हमारी कमी के कारण? उन्होंने कहा: नहीं, तुम उस दिन बहुत होगे, पर तुम बाढ़ के कूड़े जैसे कूड़े होगे।

अबू दाऊद और अहमद की रिवायत — अलबानी ने सहीह ठहराया

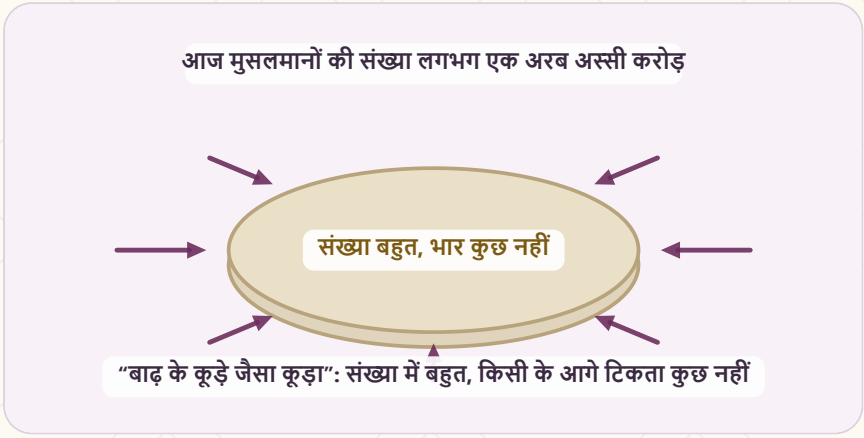

हदीस ने इनकार किया कि कारण संख्या की कमी होगी — और असली कारण बता दिया

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने कहा कि क़ौमें मुसलमानों के विरुद्ध एक-दूसरे को यूँ बुलाएँगी जैसे खाने वाले थाल की ओर बुलाते हैं। उनसे पूछा गया: कम होने के कारण? उन्होंने कहा: **नहीं, तुम बहुत होगे** — पर बिना किसी भार और बिना किसी असर के।

उस समय लोग क्या मानते थे?

वह समुदाय धरती की सबसे बड़ी शक्ति बनने के रास्ते पर था। एक ही पीढ़ी के भीतर उसने फ़ारस, शाम, मिस्र और उत्तरी अफ़्रीक़ा खोल दिए। तो एक आने वाली कमज़ोरी की भविष्यवाणी — और वह भी **संख्या की बहुतायत के साथ** — घटनाओं की दिखाई देने वाली चाल से बिलकुल उलटी लगती थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

आज मुसलमानों की संख्या लगभग एक अरब अस्सी करोड़ है, यानी धरती की आबादी का लगभग एक चौथाई, और उनके पास दुनिया के सबसे बड़े ऊर्जा-भंडार तथा रणनीतिक भौगोलिक ठिकाने हैं। फिर भी वैश्विक वैज्ञानिक, औद्योगिक और आर्थिक उत्पादन में उनका हिस्सा उनकी संख्या के मुक़ाबले नगण्य है, और उनकी भूमियाँ धरती की सबसे अधिक संघर्षग्रस्त और परावलम्बी भूमियों में हैं। **संख्या मौजूद है; सभ्यता का भार अनुपस्थित है** — ठीक वही समीकरण जो हदीस ने बताया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस हदीस की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसने **ग़लत व्याख्या का पहले से अनुमान लगाया और उसका स्पष्ट इनकार किया**। जब पूछा गया "क्या उस दिन हमारी कमी के कारण?" तो उन्होंने हाँ नहीं कहा — उन्होंने कहा "नहीं, तुम उस दिन बहुत होगे।" उन्होंने संख्या को समीकरण से बिलकुल बाहर कर दिया और स्थापित किया कि **दोष गुण में है, मात्रा में नहीं**। और **"बाढ़ के कूड़े"** की तस्वीर अत्यन्त सूक्ष्म है: कूड़ा वह झाग और टहनियाँ हैं जिन्हें बाढ़ अपनी सतह पर ढोती है, जो दिखने में भरपूर हैं पर भारहीन, जो कहीं टिकते नहीं, और जहाँ धकेले जाएँ वहीं जाते हैं, न कि जहाँ वे चाहें। फिर उन्होंने बाक़ी हदीस में कारण भी बता दिया: "कमज़ोरी... दुनिया की मुहब्बत और मौत से नफ़रत" — यानी एक मनोवैज्ञानिक निदान, कोई सैनिक नहीं।